International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 06-08

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 06-08
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-03-2022
Accepted: 09-04-2022

वेद प्रकाश पाण्डेय
पीएच.डी. शोध छात्र,
बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
वेद प्रकाश पाण्डेय
पीएच.डी. शोध छात्र,
बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली, भारत

कुशीनगर जनपद का ऐतिहासिक महत्त्व

वेद प्रकाश पाण्डेय

प्रस्तावना

वर्तमान समय की कुशीनगर वास्तव में प्राचीन काल में अन्य नामों से पहचाना जाता रहा है जैसे कि बौद्ध काल में कुसावती नाम से जाना जाता रहा है तथा बौद्ध काल के पश्चात् कुशीनारा नाम से पहचाना जाने लगा। कुशीनारा (वर्तमान समय का कुशीनगर) मल्ल राज्य की राजधानी हुआ करती थी जो कि छठी शताब्दी ईसा पूर्व में 16 महाजनपदों में से एक थी। उसके उपरान्त मल्ल राज्य मौर्य वंश, शुंग वंश, गुप्त वंश आदि साम्राज्यों के अभिन्न अंग के रूप में जाना जाता रहा। सामान्य तौर पर वर्तमान कुशीनगर के विषय में यह कहा जाता है कि यह वर्तमान समय में प्रमुख भारतीय पर्यटन स्थलों में से एक है जिसके इतिहास के अभाव में संपूर्ण भारतीय इतिहास को पूर्ण कर पाना असंभव प्रतीत होता है। कुशीनगर को विशेष तौर पर एक बौद्ध स्थल के रूप में जाना जाता है जिससे बौद्ध में आस्था रखने वाले अनुयायियों हेतु यह कुशीनगर प्रमुख धार्मिक स्थल के रूप में जाना जाता रहा है। साधारण रूप में कुशीनगर अपने में ही प्रकृति की सुंदरता के विषय में झलक प्रदान करता है जोकि हिमालय की तराई में स्थित होने के साथ–साथ शांत वातावरण भगवान बुद्ध के महानिर्वाण से पहले आनंद को दिए उपदेशों को आत्मसात किए हुए हैं। कुशीनगर का शांत वातावरण स्वयं में ही एक अलग बहुत धार्मिक वृत्तांत को सुनाता हुआ सा प्रतीत होता है। कुशीनगर पग्रटकों के एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ पर छोटे–बड़े अनेकों बौद्ध मठों के साथ–साथ कई मंदिर भी मौजूद हैं जिनके कारण बस यह पर्यटन स्थल पर्यटकों में बहुत अधिक लोकप्रिय है। यहाँ पर पर्यटक द्वारा व्यतीत किया हुआ एक–एक पल एक आध्यात्मिक शांति से परिपूर्ण होता है। कशुीनगर के विषय में एक बात सर्वमत से प्रचलित है कि कुशीनगर भगवान बुद्ध का सर्वप्रिय स्थान था। उन्होंने अपने जीवन का अधिकतम समय कुशीनगर में ही व्यतीत किया था। इसी के साथ ही भिक्षु व भगवान बुद्ध के शिष्य आनंद ने जब कुशीनगर के महत्त्व को सूक्ष्म जानकर तथा अन्य महाजनपदों की तुलना में कम समझकर तथागत से प्रार्थना की थी कि वह इस स्थान कुशीनगर के अलावा राज्य के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों पर निर्वाण प्राप्त करें, जिसके उत्तर में भगवान बुद्ध ने आनंद को कशुीनगर की प्राचीनतम महत्ता को स्वीकार करने हेतु प्रेरित किया था और इसके विषय में बताया था कि भूतकाल में महासुदर्शन नामक चारों दिशाओं का विजेता सात रत्नों से युक्त, धार्मिक राजा चक्रवर्ती राजा था। यह कुशीनगर राजा महासुदर्शन की कुशावती नामक राजधानी थी, जो कि पूर्व 12 योजन उत्तर–दक्षिण विस्तार में सात योजन थी। इस प्रकार माना जाता है कि वर्तमान समय के कुशीनगर की महानता को भगवान बुद्ध ने भी स्वीकार किया था, जिसके परिणामस्वरूप इसका महत्त्व हजारों गुना बढ़ गया। इसके अतिरिक्त महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन का प्रमुख उपदेश कुशीनारा सुत्त और किन्ति सुत्त का उपदेश इसी नगर के निकट बलिहरण उपवन में दिया था। वहीं मल्लो हेतु अपनी दया करुणा व कृपा के भाव को प्रदर्शित करते हुए भगवान बुद्ध ने अपनी मृत्यु शय्या पर लेटे हुए आनंद को संबोधित करते हुए कहा था कि आनंद कुशीनारा में जाकर नगरवासियों मल्लों को कहो – हे वशिष्ठों आज रात के पिछले पहर तथागत का परिनिर्वाण होगा। हे वशिष्ठों पीछे अफसोस मत करना कि हमारे ग्राम क्षेत्र में तथागत का निर्वाण हुआ लेकिन हम अंतिम काल में तथागत के दर्शन ना कर पाए। मानवता हेतु लगभग संपूर्ण भारत में भ्रमण करने वाले तथा मनुष्य को उनके दुखों से मुक्ति प्रदान करने हेतु लगभग आधी शताब्दी तक महात्मा बुद्ध ने भारत में भ्रमण किया। भगवान बुद्ध ने कुशीनगर में ही अपना अंतिम उपदेश 120 वर्षीय सुभद्र को दिया था। इस प्रकार से भगवान बुद्ध के अंतिम शिष्य सुभद्र हुए। तथागत ने शिष्यों के प्रश्नोत्तर में कहा था "सभी वस्तुओं का अन्त अवश्यंभावी है अतः जीवन के लक्ष्य के लिए अप्रमाद सहित प्रयास करो। इन शब्दों को कहने के पश्चात् भगवान बुद्ध ने वैशाख पूर्णिमा की दिन 80 वर्ष की अवस्था में निर्वाण प्राप्त किया। भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् तथा उनकी अंत्येष्टि के पश्चात् द्रोण नामक ब्राह्मण ने उनकी अस्थियों को आठ भागों में

बांट दिया, जिसमें से मल्लों ने अपने अंश के अवशेष पर कुशीनगर में एक स्तूप का निर्माण कराया था, जिसके कारण यह स्थल बौद्धों में तीर्थस्थल के रूप में विख्यात हुआ। उपरोक्त कथनों के पश्चात् कुशीनगर के इतिहास व उसके महत्त्व की जानकारी सूक्ष्म रूप से प्राप्त होती है। कुशीनगर के विषय में सर्वप्रथम जानकारी कनिंघम के सहायक कार्लाइन द्वारा सन 1876 में इस स्थल के उत्खनन का कार्य किया गया, जिसमें इस स्थल पर एक विशाल बौद्ध स्तूप का पता लगा। इसके साथ ही भगवान बुद्ध की पर निर्वाण स्थल में आयताकार चैत्य खंडहर प्राप्त हुई।

इसी के साथ में वर्मा के एक संन्यासी चंद्र स्वामी का सन् 1903 में भारत में आगमन हुआ। उन्होंने कुशीनगर की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए महानिर्वाण मंदिर को एक जीवित मंदिर के रूप में स्थापित किया। आजादी के बाद कुशीनगर देवरिया जिले का भाग था। बाद में उत्तर प्रदेश सरकार ने 13 मई 1994 को कुशीनगर को नए जिले के रूप में स्थापित किया। कुशीनगर का इतिहास एक अत्यंत प्राचीन गौरवशाली इतिहास रहा है, जिसमें सर्वप्रथम है महात्मा बुद्ध को निर्वाण की प्राप्ति।

हिमालय की तराई क्षेत्र में स्थित कुशीनगर का वास्तविक इतिहास प्राचीनतम और गौरवपूर्ण के साथ ही साथ पर्यटन हेतु भी अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण बन जाता है। सन् 1876 में एक अंग्रेज पुरातत्त्वविद कनिंघम ने वर्तमान कुशीनगर के खोजी दल का नेतृत्व किया। कनिंघम द्वारा ही कुशीनगर से छठी शताब्दी में बनी महात्मा बुद्ध की लेटी हुई प्रतिमा खोजी गई थी। कुशीनगर का ऐतिहासिक महत्त्व सिर्फ बौद्ध धर्म के कारण है यह कहना वास्तव मं श्रीनगर के साथ अन्याय प्रतीत होता है, क्योंकि बौद्ध धर्म के अलावा भी कुशीनगर अन्य धर्मो में भी प्रसिद्ध है। उदाहरणस्वरूप वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में भी कुशीनगर भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के पुत्र की राजधानी के रूप में विख्यात हो चुका था। इसी कारण इसका नाम कुसावती भी प्राप्त होता है। इस किंवदंती के अतिरिक्त कुशीनगर के प्रसिद्धि का एक अन्य कारण है कि यहाँ पर उत्तर भारत का इकलौता सूर्य मंदिर में इसी जिले के तुर्कपट्टी स्थल में स्थित है। इसी स्थान पर पुरातत्त्व विभाग द्वारा की गई खुदाई के समय भगवान सूर्य की एक प्रतिमा भी प्राप्त हुई। यह सूर्य भगवान की प्रतिमा गुप्तकालीन मानी जाती है। इस प्रकार कुशीनगर में विश्वविख्यात अनेकों ऐसे पर्यटन स्थल हैं जिनके संबंध में सहज ही कहा जा सकता है कि वास्तव में इन पर्यटन केंद्रों ने समय–समय पर कुशीनगर के इतिहास में स्वयं के निर्माण व इतिहास से लेकर अनेकों ऐसे गाथाओं को वह स्थान दिलवाया, जिसके कारणवश भारत का नाम वास्तव में वैश्विक दृष्टि में अद्वितीय बन गया। कुशीनगर में ऐसे अनेकों स्थल हैं जिनकी जानकारी वास्तव में होना प्रत्येक भारतीय के लिए गौरवपूर्ण हैं

निर्वाण स्तूपः कुशीनगर के विश्वस्तरीय प्रसिद्धि का मुख्य केंद्र महात्मा बुद्ध का निर्वाण स्तूप ही है। निर्वाण स्तूप की खोज का श्रेय कनिंघम के सहायक व पुरातत्त्व विशेषक कार्लाइन को दिया जाता ह। इस वृहद स्तूप का निर्माण ईंटों और रोड़ी से किया गया था। इसी स्थान से तांबे का पात्र प्राप्त हुआ था जिसमें ब्राह्मी लिपि में कुछ शब्द अंकित है, जिसके आधार पर इस स्थल को तथागत भगवान बुद्ध के परिनिर्वाण स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त होती है।

महापरिनिर्वाण विहार (मंदिर): कुशीनगर के पय्रटन केंद्रों में महापरिनिर्वाण विहार का विशेष स्थान है। यही विहार वर्तमान में मुख्य आकर्षण का केंद्र भी है। यहाँ पर महात्मा बुद्ध की 6:10 मीटर लंबी अद्भुत प्रतिमा स्थापित है। यह प्रतिमा 1876 में उत्खनन के समय प्राप्त हुई थी। इस मूर्ति का निर्माण चुनार बलुआ पत्थर को काटकर किया गया था। यहाँ पर यह जान लेना अति आवश्यक होगा इस प्रतिमा को जिस प्रकार से दाएं ओर करवट लेते हुए दर्शाया गया है वास्तव में उससे यह प्रतीत होता है यह मूर्ति तथागत की अंतिम अवस्था को दर्शाने का कार्य करती है। इस प्रतिमा के नीचे लिखे अभिलेखों के माध्यम से यह जानकारी अवश्य प्राप्त होती है कि यह प्रतिमा लगभग पांचवीं सदी के आसपास निर्मित की गई थी। इस प्रतिमा की विशेषता यह है कि वास्तव में इस प्रतिमा को अलग–अलग तीन कोणों से देखा जाए तो यह प्रतिमा 3 को अलग–अलग भाव प्रकट करते हुए प्रतीत होती है।

माथा कुंआर तीर्थः माथा कुआर तीर्थ का निर्माण स्तूप से लगभग 400 गज की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर उत्खनन के दौरान तथागत की काले रंग की मूर्ति प्राप्त हुई थी जो कि स्पर्शी मुद्रा में है। इस प्रतिमा के बोधि वृक्ष के नीचे प्राप्त होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। इस मूर्ति की तल पर खुदे हुए अभिलेख के माध्यम से ज्ञात होता है कि इस प्रतिमा का निर्माण 10वीं या 11वीं सदी के मध्य किया गया था। इसके समीप ही बौद्ध विहार के अवशेषों के प्राप्त होने के संकेत भी प्राप्त होते हैं।

रामाभार स्तूपः रामाभार स्तूप, महापरिनिर्वाण मंदिर से 1.5 किलोमीटर की दूरी पर उसी स्थान पर स्थित है जहाँ तथागत भगवान बुद्ध का निर्वाण पश्चात् अंतिम संस्कार किया गया था। 15 मीटर ऊँचा यह स्तूप अन्य स्तूपों की तुलना में अत्यंत विशाल है। प्राचीन बौद्ध साहित्य ग्रंथों में इस स्थान को मुक्त बंधर के नाम से अंकित किया गया है। माना जाता है कि इस स्तूप को मल्ल शासकों द्वारा निर्मित किया गया था।

चीनी मंदिरः चीनी मंदिर में भगवान बुद्ध की मनमोहन मूर्ति वास्तव में विशेष आकर्षण का केंद्र माना जाता है। इस मूर्ति और मंदिर का निर्माण चीन द्वारा करवाया गया था।

जापानी मंदिरः जापानी मंदिर में स्थित भगवान की मूर्ति वास्तविक रूप से मुख्य आकर्षण का केंद्र है। इस सुंदर व विशेष मूर्ति का निर्माण अष्टधातु के माध्यम से किया गया था। इस मूर्ति को मुख्य तौर पर जापान से लाया गया था।

वाटकई मंदिरः वाटकई मंदिर का निर्माण थाई बौद्ध स्थापत्य कला शैली में स्थापित किया गया है, जिसका निर्माण काल 1904 के आसपास माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण बौद्ध अनुयायियों द्वारा दिए गए दान से किया गया था। इस मंदिर का विशाल प्रांगण एक अलग ही कहानी कहता है तथा बागवानी स्वय में एक मनोहारी दृश्य दिखाता है।

अतः साधारण तौर पर यह कहा जा सकता है कि कुशीनगर अपने स्वयं में एक इतिहास का संचालन करता है जिसमें भगवान श्री राम, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध आदि किसी न किसी रूप में कुशीनगर से जुड़े प्रतीत होते हैं। मान्यता है कि महामा बुद्ध के पूर्व भी कुशीनगर में श्री राम के पुत्र कुश की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था। इस प्रकार से कुशीनगर के इतिहास पर शंका व्यक्त कर पाना संभव नहीं है तथा इसका गौरवपूर्ण इतिहास स्वयं में ही एक कहानी कहता है।

तत्पश्चात् 'कुशीनगर' ने अपने पतन की तरफ करवट ली। कुशीनगर के पतन और दुर्दशा के संबंध में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि इस राज्य की राजधानी बिलकुल ध्वस्त हो गई है। इसके नगर तथा ग्राम प्रायः निर्जन और उजाड़ हैं। पुरानी टूटी दीवारों का घेरा लगभग 10 मीटर रह गया है। इन दीवारों की केवल नींवें ही बचे हैं।

वर्तमान कुशीनगर को प्रकाश में लाने का श्रेय मुख्य तौर पर जनरल कनिंघम को जाता है, जिन्होंने वहाँ अपने सहायक ए. कलाईन के साथ मिलकर यहाँ पर खुाई करके कुशीनगर को आम जनमानस के सामने लाकर इतिहास में कुशीनगर के इतिहास का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखने का कार्य किया। इसी के साथ ही साथ

संपूर्ण भारत में स्वर्णिम इतिहास को जानने की लालसा सभी भारतवासियों में पैदा हुआ।

कहा जाता है कि कुशीनगर महात्मा बुद्ध का प्रिय स्थान था क्योंकि यहाँ पर महात्मा बुद्ध के बाल्यकाल एवं युवावस्था में अनेकों बार कुशीनगर में अपने पवित्र को लेकर आए। माना जाता है कि कुशीनगर एक समय बहुत ही समृद्ध स्थान था जिसके लिए स्वयं तथागत ने अनेकों बार इसकी प्रशंसा में शब्द कहे थे। यहाँ के नगरवासियों पर बुद्ध की शिक्षाओं का बहुत अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ा था। एक कथा के अनुसार जब तथागत अपने जीवनकाल के अंतिम समय में यहाँ आए तक उस समय के मल्ल राजा ने उनके आदर सत्कार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं होने दी। माना जाता है कि मल्ल राजा ने यह घोषणा सार्वजनिक करवा दी कि यदि कोई नगरवासी बुद्ध के स्वागत समारोह में सम्मिलित नहीं हुआ तो वह दंड स्वरूप उससे 500 सोने की मुद्रा के रूप में लिया जाएगा। इस प्रकार कुशीनगर के महत्त्व को इस प्रकार से लिया जा सकता है। वास्तव में इसका बहुत ही स्वाभाविक स्वर्णिम इतिहास रहा है जिसके कारण पर इसने बहुत अधिक प्रति प्राप्त की थी।

वर्तमान समय में कुशीनगर के पास फाजिलनगर कस्बा है। उसी के बिल्कुल निकट 'छठियांक' ग्राम स्थित है। कहा जाता है कि इसी गांव के चुंद नामक लोहार ने ही भगवान को सुअर महदब भोजन खिलाया था। कहा जाता है कि यह भोजन सुअर का अधपका मांस था जो कि उन्हें पचा नहीं और उन्हें पेचिश हो गई। इसी भोजन के पश्चात् भगवान को महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।

कुशीनगर की प्रसिद्धि का सिर्फ बौद्ध धर्म ही एकमात्र कारण नहीं है, बौद्ध धर्म के समान्तर जैन धर्म भी इसकी प्रसिद्धि का कारण है। क्योंकि कुशीनगद से मात्र 16 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम में एक गणराज्य था जिसको तत्कालीन समय में पावा गणराज्य के नाम से जाना जाता था। यहाँ पर बौद्ध धर्म के साथ–साथ जैन धर्म को भी पूर्ण रूप से प्रसिद्धि प्राप्त थी। इसका मुख्य कारण जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी (महात्मा बुद्ध का मकालीन माना जाता है) जी ने पावानगर (जिसे वर्तमान में फाजिलनगर के नाम से जाना जाता है) में निर्वाण की प्राप्ति की थी। इसी कारण पर कुशीनगर का व उसके आसपास क्षेत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

इसके साथ ही यह माना जाता है कि कुशीनगर जैन धर्म, बौद्ध धर्म के साथ–साथ हिंदू धर्म के अनुयायियों हेतु भी बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँ पर पुरातत्त्वविों को अनेक स्थलों पर गुप्त काल के भग्नावशेषों को पाया है, जिन्हें पुरातत्त्व विभाग ने पुरातात्त्विक महत्त्व का मानते हुए संग्रहित क्षेत्र घोषित किया हुआ है। इसी के साथ ही सूर्य मंदिर वहाँ पर स्थित है, इसके संबंध में माना जाता है कि उत्तर भारत का एकमात्र सूर्य मंदिर है, जोकि यहाँ तुर्कपट्टी पर स्थित है। यहाँ पर पुरातत्त्व विभाग द्वारा खुदाई के दौरान मिली सूर्य प्रतिमा गुप्तकालीन समय की मानी जाती है। इसी के साथ ही इस जनपद के आसपास अक्सर उत्खनन कार्यों में अधिकतर पुरातत्त्व विभाग को अनेक प्रकार के अवशेष प्राप्त होते रहते हैं।

वर्तमान कुशीनगर जनपद जिले का मुख्यालय पडरौना है, जिसके नामकरण के विषय में एक कहानी है कि जब भगवान राम के विवाह के उपरांत में वह इसी मार्ग से वापस लौटे थे। उनके पैरों में रमित धरती पहले पदरामा और बाद में पडरौना नाम से प्रसिद्ध हुआ। माना जाता है कि भगवान श्री राम जब जनकपुर से अयोध्या वापस लौटे थे तब उन्होंने पडरौना 10 किलोमीटर पूरब से होकर बहने वाली बॉसी नदी को पार किया था। वर्तमान में आज भी बॉसी नदी के उस स्थान को रामघाट के नाम से जाना जाता है, इसी कारण पर प्रति वर्ष यहाँ पर भव्य मेले का आयोजन होता है, जिसमें उत्तर भारत और बिहार सहित संपूर्ण देश के लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। बांसी नदी के महत्त्व को मुख्यतौर पर केवल इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि एक कहावत सम्पूर्ण स्थानीय जनों में प्रसिद्ध है कि "सौ काशी ना एक बाँसी"। मुगल काल में भी जनपद ने अपनी खास पहचान को नहीं खोया था।

इस प्रकार से कुशीनगर व उसके आसपास के इतिहास के संबंध में प्राप्त साक्ष्यों से इसकी प्राचीनता और ऐतिहासिक महत्त्व का वृहद चित्रण होता है।

सन्दर्भ

1. अंगुत्तर निकाय प्रकाशन, (मूल) सं. भिक्षु जगदीश काश्यप, बिहार राजकीय पालि मंडल, महाविहार नालंदा, पटना, 1960
2. कल्पसूत्र, भद्रबाहु, विजयसूर्योदय सूरि, बारसासूल प्रकाशक समिति, सूरत, गुजरात, 1980
3. दीघनिकाय, बौद्ध (हि.अ.) राहुल सांकृत्यायन और जगदीश काश्यम, भारतीय विहार परिषद, लखनऊ, द्वि.सं. 1919
4. बुद्ध चरित, अश्वघोष, टीका सूर्य नारायण चौधरी, 2 वाल्यूम, बनारस, 1942
5. दिव्यावदान, स.पी.एल. वैध, मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1959
6. मिलिन्दपन्हो, मूल व हिन्दी टीका, वाराणसी, 1979
7. जातक अट्ठकथा, आनन्द कौसल्यायन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1946
8. स्मिथ, वी.ए., द रिमेन्स नियर कसिया, इन द गोरखपुर, इलाहाबाद, 1896
9. स्मिथ, वी.ए., अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया, लन्दन, 1924